Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

क्षेत्रीय ऐतिहासिक व्यक्तित्व : आदिवासी क्रांतिकारी, बिरजू नायक के सन्दर्भ में

डॉ. मोतीलाल अवाया*

* सहा. प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेंधवा, जिला बड़वानी (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारत के मध्य में अवस्थित मध्य प्रदेश सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वतमालाओं के मध्य स्थित है। नर्मदा सबसे प्रमुख नदी हैं। मध्य प्रदेश भारत का प्रमुख राज्य की स्थापना 1 नवंबर 1956 में हुई थी यह प्रदेश 6 सांस्कृतिक क्षेत्र मालवा, निमाड, बुंदेलखंड, बघेलखंड, महाकौशल एवं चंबल में विभक्त है। 1961 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित आदिम जातियों की संख्या क्रमश: 6.45 करोड़ तथा 2.99 करोड़ है। डॉक्टर (गिरिसन) के शब्दों में कहूं तो आदिवासी लोग भारत की सभ्यता के निर्माता हैं। हिंदू धर्म बहुत महान हो सकता है, परंतु आदिवासी दर्शन प्रकृतिवाद और जातिवाद की देन है आदिवासी प्रकृति वाद कोई जादू टोना भर नहीं है, यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि केवल आदिवासी ही देश को राष्ट्रीय आत्महत्या से बचा सकते हैं।

देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावार करने वाले अनेक क्रांतिकारी को कुछ पश्चिमी इतिहासकारो ने डाकू और लूटेरे कह कर इतिहास के साथ न्याय नहीं किया है। डॉक्टर वॉरियर एल्विन ने लिखा है कि आदिवासियों की संस्कृति हमारी संस्कृति से उच्च है, उनका विचार संभावित सत्य प्रतीत होता है। जब हम भारत के इतिहास को पढ़ते हैं, कि मुगल काल में मुस्लिम आक्रमणकारियो के विरोध में आदिवासियों की सेना ने हिंदुओं का साथ दिया था। जिन्होंने देश के दूर-दराज और आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच आजादी का अलख जगाने का काम किया। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उन पर लूट-पाट, हत्या और लोगों को भड़काने का आरोप लगाकर इन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी और बदनाम करने का प्रयाय किया। लेकिन आदिवासी क्षेत्रों की जनता ने उनकों लोकगीतों और लोक-कथाओं में इन्हें अमर बना दिया। इनमें चर्चित आदिवासी क्रांतिकारियों के नाम बिरसा मुंडा, खाज्या नायक, राजा पूजा भील, भीमा नायक, टंट्या मामा, झलकारी बाई, हल्दी बाई, शहीद वीर नारायणसिंह, रूमाल्या नायक, क्षितु किराड, घूसिया नायक और बिरजू नायक आदि इन महापुरुषों से संबंधित भील समुदाय के लोगों द्वारा लोकगीतों के माध्यम से इतिहास में उनके योगदान के गीत गाए जाते हैं।

जिस प्रकार मछलियां पानी के बिना जीवित नहीं रह सकती उसी प्रकार आदिवासी जीवन भी गीत, संगीत, नृत्य, सभ्यता, संस्कृति व उसके इतिहास के बिना अधूरा है, भारत में आदिवासी ही इकलौता ऐसा समुदाय है जिसके पास प्रकृति वादी संस्कृति और मानवतावादी सभ्यता आज भी मौलिक रूप से संरक्षित है देश के सुप्रसिद्ध विद्वान साहित्यकार 'कमलेश्वर' ने इसलिए लिखा था कि भारत का मूल चेहरा और मूल संस्कृति सभ्यता उसके इतिहास को देखना, जानना व समझना हो तो आदिवासी क्षेत्र में कुछ दिन गुजार लो। मध्यप्रदेश के बड़वानी के राजपुर तहसील के नगर पलसुद के निकट ग्राम मटली तथा ग्राम सावरदा के बीच स्थित एक पहाड़ी पर बनी 'बाँडी हवेली' (पुराना महल) को वीर बिरजू नायक का कर्महार माना जाता है और जिन्होंने अपनी जवानी, अन्याय व तानाशाही के खिलाफ लड़ने के लिए समर्पित कर दी। सन् 1857 की क्रांति के शौर्य क्रांतिकारी एक महान योद्धा सतपुड़ा सिंधी घाटी (बड़वानी जिला) की पहाड़ियों में रहने वाले निमाड़ के आदिवासी शेर वीर योद्धा बिरजू नायक जिनका 1857 की क्रांति में योगदान से आप बहुत कम वाकिफ हैं। उन्होंने सिंधी घाटी क्षेत्र में अंग्रेजों के नाक में दम कर दिया था। निमाड़ क्षेत्र में अंग्रेजों के खिलाफ कई आदिवासी विद्रोह में अहम योगदान दिया था आज भी इन सुदूर सिंधी घाटी की पहाड़ियों में बिरजू नायक की गाथा सुनाई देती है।

कहा जाता है कि वीर वीर बिरजू नायक अपने साथियों को सूचना देने हेतु वाद्य यंत्र का उपयोग करते थे जिससे एक स्थान से दुसरे स्थान पर सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे उस स्थान को बेला बेड़ी के नाम से जाना जाता है। बिरजू नायक, बांडी हवेली,से अपने साथियों के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी योजनाएं बनाकर उन्हें अंजाम देते थे। बिरजू नायक हमेशा गरीब व किसान के हितों के लिए लड़ते थे। वीर योद्धा भीमा नायक खाजा नायक और टंट्या मामा भील के साथ कई विद्रोह में सहभागी बने वे अक्सर अंग्रेजों को लूटकर सामग्री गरीबों में बांट देते थे। अपैल 1853 में जब अंग्रेज सरकार के फौजी अफसर मेजर हैसलवुड और मेजर इवान्स अपनी फौज के साथ खानदेश (धुलिया व खरगोन की सीमा पर बसे अम्बापानी गॉव) पहुँचे, जो वे अच्छी तरह से जानते थे कि खाज्या नायक व भीमा नायक के साथ होने वाली आज की मुठभैड़ खानदेश में अंग्रेजों के शासन के लिए निर्णायक साबित हो सकती है। 19वीं सदी में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी आकांक्षाओं को पूरी करने में लगी फौज के सामने जब देश के अधिकतर स्थानीय राजा महाराजाओं ने घुटने टेक दिए थे तब देश के कुछ ही हिस्सों में कुछ स्वाभिमानी आदिवासी उनके अपनों की रक्षा के लिए लड़ रहे थे।

1857 की क्रांति में वीर खाज्या नायक, भीमा नायक व बिरजू नायक की अहम भूमिका रही। अंग्रेजों के समय में आदिवासी कई यौद्धाओं ने अपना बलिदान दिया पर आज तक उनका इतिहास किताब में एक लाइन से ज्यादा जिक्र नहीं किया है या जिक्र ही नहीं किया गया। अंग्रेजो के विरूद्ध वीर

बिरजू नायक ने अहम भूमिका निभाई वीर आदिवासी क्रांतिकारी बिरजू नायक द्वारा युवास्था में आदिवासी यौद्धाओं के साथ सिंधी घाटी क्षेत्र (जिला बड़वानी) में अंग्रेजों के विरूद्ध लाड़ाईयों में भीमा नायक व खाज्या नायक तथा उनके सहयोगीयों का सहयोग किया। बिरजू नायक व भीमा नायक की अच्छी दोस्ती रही थी बिरजू नायक हमेशा गरीब व किसानों के हितों के लिए लड़ते थे वीर योद्धा भीमानायक, खाज्या नायक और टंट्या मामा भील के साथ कई विद्रोह में भाग लिया। स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपै के पश्चिम निमाड़ के आगमन पर राजपुर क्षेत्र के गुप्त रास्तों से नर्मदा नदी पार कर मंजिल तक पहुॅचनाने में भीमा नायक, खाज्या नायक एवं बिरजू नायक तथा साथियों का अहम योगदान था। स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे के पश्चिम निमाड़ के आगमन पर राजपुर क्षेत्र के गुप्त रास्तों से नर्मदा नदी पार करवाकर मंजिल तक पहुंचने में भीमा नायक , खाज्या नायक और बिरजू नायक तथा साथियों का अहम योगदान था। इसी योगदान के बदले उन्हें वीर की उपाधि दी गई। निवाली से सिंधी-घाटी, से राजपूर तक उनका गढ़ रहा। ग्राम मटली स्थित झरने यकुंडी पर नहाने जाया करते थे। प्रतिदिन की तरह एक बार झरने 'कुंडी' पर नहाने पहुंचे थे। तभी अंग्रेजों द्वारा भेजे गए व्यक्ति द्वारा बिरजू नायक का सिर धड़ से अलग कर दिया।

बिरजू नायक 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को देखते हुए स्थानीय स्तर पर प्रतिवर्ष 2 मई को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है और प्रतिवर्ष दिपावली पर बॉडी हवेली में आदिवासी रिति-रिवाज, संस्कृति व सभ्यता परम्परा अनुसार पूजा-पाठ की जाती है और आदिवासीयों के मान, सम्मान स्वाभिमान का प्रतीक 200 पगड़ी भी गरीबों को बॉटी जाती है आज ऐसे ही क्षेत्रीय इतिहास को सहजने और सवारने की आवश्यकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मालवा वीर की कहानी : मनोहर जायसवाल
2. विकास यात्रा (पत्रिका 2008)
3. म.प्र. ज्ञान सम्पदा : म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी
4. भारत 1965 प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
5. दैनिक भास्कर

****